

अध्याय I

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क राजस्व

संघ सरकार के स्रोत

1.1 भारत सरकार के स्रोतों में संघ सरकार द्वारा प्राप्त सभी राजस्व, ट्रेजरी बिलों के जारी करने से प्राप्त सभी ऋण, आन्तरिक और बाह्य ऋण तथा सरकार द्वारा ऋण की वापसी से प्राप्त समस्त राशियाँ शामिल हैं। संघ सरकार के कर राजस्व स्रोत में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष करों की राजस्व प्राप्तियाँ शामिल हैं। तालिका 1.1 संघ सरकार की प्राप्तियों का सार दर्शाती है जो (वित्तीय वर्ष 2012-13 के लिए ₹ 53,67,988.99 करोड़¹ था। इनमें से, ₹ 10,36,460.45 करोड़ की सकल कर प्राप्तियाँ सहित उसकी अपनी प्राप्तियाँ ₹ 13,99,951.05 करोड़ थीं।

तालिका 1.1: संघ सरकार के संसाधन

	₹ करोड़
क. कुल राजस्व प्राप्तियाँ	13,47,437.62
i. प्रत्यक्ष कर प्राप्तियाँ	5,58,989.47
ii. अप्रत्यक्ष कर प्राप्तियाँ	4,74,728.28
iii. केन्द्र शासित प्रदेशों से अन्य कर प्राप्तियाँ	2,742.70
iv. सहायता अनुदान एवं अंशदान सहित गैर-कर प्राप्तियाँ	3,10,977.17
ख. विविध पूंजीगत प्राप्तियाँ	25,889.80
ग. ऋण एवं अग्रिम की वसूली	26,623.63
ङ. लोक ऋण प्राप्तियाँ	39,68,037.94
भारत सरकार की प्राप्तियाँ (क+ख+ग+घ)	53,67,988.99

टिप्पणी : कर प्राप्तियों में राज्यों को प्रत्यक्ष रूप से सौंपे गए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष करों से कुल राजस्व प्राप्तियों का हिस्सा ₹ 2,91,546.61 करोड़ शामिल है।

भारत के संविधान के अनुच्छेद 266 के तहत बनाई गई भारत की संचित निधि में अन्य बातों के साथ-साथ भारत सरकार को प्राप्त सम्पूर्ण राजस्व आता है। भारत के संघ की राजस्व प्राप्तियाँ कर और गैर कर स्रोतों दोनों से उत्पन्न होती हैं। कर राजस्व में संघ सरकार द्वारा मुख्य रूप से लगाए गए करों/शुल्कों से प्राप्त आय अर्थात् आय कर (कृषि आय के अलावा) और धन पर कर, निगम कर, सीमा शुल्क, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, सेवाओं पर कर इत्यादि हैं; जो संविधान की सातवीं अनुसूची की सूची 1 के तहत प्रविष्टियों द्वारा कवर होती हैं।

¹ स्रोत: वि.व 2012-13 के संघ वित्त लेखे

करों को व्यापक रूप से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष करों में वर्गीकृत किया जाता है। सामान्य रूप से, जिन व्यक्तियों पर कर लगाया/आरोपित किया जाता है उनके द्वारा सरकार को प्रत्यक्ष रूप से किए गए भुगतान को प्रत्यक्ष कर के रूप में संदर्भित किया जाता है। इनमें आयकर, निगम कर, धन कर इत्यादि² शामिल हैं। दूसरी तरफ अप्रत्यक्ष कर वह होते हैं जिसमें एक सत्व पर कर लगाया जाता है जबकि उसका भार दूसरे सत्व पर पड़ता है।

अप्रत्यक्ष करों की प्रकृति

1.2 अप्रत्यक्ष कर माल/सेवाओं की आपूर्ति की लागत से संबद्ध है और इस अर्थ में वह व्यक्ति विशिष्ट की बजाए लेन देन विशिष्ट है। संसद के अधिनियमों के तहत लगाए गए मुख्य अप्रत्यक्ष कर/शुल्क नीचे सूचीबद्ध हैं:

- क) **केन्द्रीय उत्पाद शुल्क:** यह शुल्क भारत में निर्मित या उत्पादित माल पर लगाया जाता है। संसद को मानव उपभोग के लिए शराब, अफीम, भारतीय गांजा और नशीली दवाओं और नशीले पदार्थों को छोड़कर किन्तु शराब और अफीम इत्यादि (संविधान की सातवीं अनुसूची की सूची 1 की प्रविष्टि 84) वाले औषधीय और प्रसाधन पदार्थों सहित भारत में निर्मित या उत्पादित तम्बाकू और अन्य माल पर उत्पाद शुल्क लगाने की शक्तियां हैं।
- ख) **सीमा शुल्क:** भारत में आयातित माल और भारत से निर्यात होने वाले कुछ माल (संविधान की सातवीं अनुसूची की सूची 1 की प्रविष्टि 83) पर यह शुल्क लगाया जाता है।
- ग) **सेवाओं पर कर:** कर योग्य क्षेत्र में प्रदान की गई सेवाओं पर सेवा कर लगाया जाता है। (संविधान की सातवीं अनुसूची की सूची 1 में प्रविष्टि 97)³

संगठनात्मक ढांचा

1.3 वित्त मंत्रालय के तहत राजस्व विभाग (डीओआर) केन्द्रीय बोर्ड राजस्व अधिनियम, 1963 के अधीन गठित एक सांविधिक बोर्ड नामतः केन्द्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क बोर्ड (सीबीईसी) के माध्यम से अप्रत्यक्ष करों से

² 2012-13 के आर्थिक सर्वेक्षण, पृष्ठ 61, तालिका 3.4 के नीचे टिप्पणी से पता चलता है कि व्यक्तिगत आय कर और निगम कर के अलावा, प्रत्यक्ष करों में व्यय, ब्याज, धन, उपहार और संपदा शुल्क से संबंधित कर शामिल हैं।

³ संविधान (अठ्ठासीवां संशोधन) अधिनियम, 2003, जिसे 15 जनवरी 2004 को राष्ट्रपति की स्वीकृति प्राप्त हुई थी को सातवीं अनुसूची की सूची 1 में 'सेवाओं पर कर' के अनुच्छेद 268 ए, अनुच्छेद 270 के संशोधन और प्रविष्टि 92 सी का समावेशन प्रदान करने के लिए प्रारंभ किया गया था। तथापि, अधिनियम अभी लागू किया जाना है।

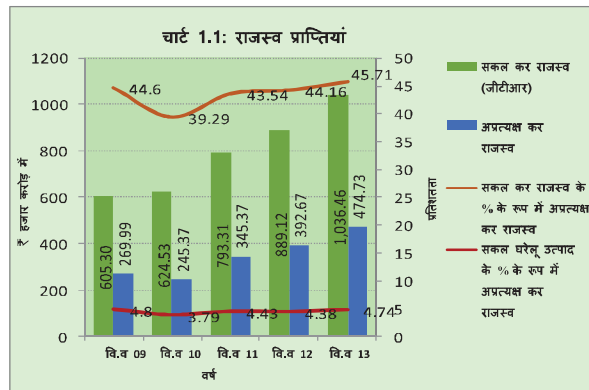
संबंधित मामलों में नियंत्रण रखती है। सीबीईसी सीमा शुल्क, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क और सेवा कर सहित अप्रत्यक्ष कर लगाने और उनका संग्रहण करता है। केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, सीमा शुल्क और सेवा कर विभाग की समग्र कर्मचारी संख्या 73,814⁴ है। परिशिष्ट 1 और 2 क्रमशः राजस्व विभाग और केन्द्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क बोर्ड का संगठनात्मक ढांचा दर्शाता है।

1.4 केन्द्रीय उत्पाद शुल्क कानून सीबीईसी द्वारा अपने क्षेत्रीय कार्यालयों, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क कमिशनरियों के माध्यम से प्रशासित होता है। इस उद्देश्य के लिए, देश को 23 ज़ोनो में विभाजित किया गया है और केन्द्रीय उत्पाद शुल्क का एक मुख्य आयुक्त प्रत्येक जोन का प्रमुख होता है। इन ज़ोनो में 93 कमिशनरियां और 4 बड़ी करदाता इकाईयां (एलटीयू) कमिशनरियां केन्द्रीय उत्पाद शुल्क के आयुक्त की अध्यक्षता में हैं। डिविजन और रेंज उत्तरवर्ती संरचनाएं हैं जिनकी अध्यक्षता क्रमशः केन्द्रीय उत्पाद शुल्क के उप/सहायक आयुक्त और अधीक्षक करते हैं।

1.5 इस प्रतिवेदन में 62 लेखापरीक्षा आपत्तियां हैं जिनका कुल राजस्व निहितार्थ ₹ 182.90 करोड़ है। मंत्रालय/विभाग ने मार्च 2014 तक ₹ 179.44 करोड़ के राजस्व वाली 58 लेखापरीक्षा आपत्तियां स्वीकार की और ₹ 21.29 करोड़ की वसूली की सूचना दी। प्रतिवेदन में 8 आपत्तियां शामिल हैं जो विभागीय चूकों पर प्रकाश डालती हैं।

अप्रत्यक्ष कर राजस्व की वृद्धि

1.6 चार्ट 1.1 और तालिका 1.2 वि.व. 09 से वि.व. 13 की अवधि के लिए जीडीपी⁵ की प्रतिशतता के रूप में अप्रत्यक्ष कर का संग्रहण दर्शाती हैं। पिछले पाँच वर्षों के दौरान जीडीपी में अप्रत्यक्ष करों का अंश लगभग 5



⁴ मंत्रालय द्वारा 18 फरवरी 2014 तक दिए गए आँकड़े।

⁵ जीडीपी - प्रेस सूचना ब्यूरो, केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन (सीएसओ), सांख्यिकी मंत्रालय का प्रेस सार। दिनांक 7 फरवरी 2014 का प्रेस सार दर्शाता है कि वर्ष 2011-12 के लिए वर्तमान मूल्य/बाजार मूल्य पर जीडीपी आँकड़े द्वितीय संशोधित आकलन तथा वर्ष 2012-13 के लिए प्रथम संशोधित आकलन है। आँकड़े आधार वर्ष 2004-05 के वर्तमान बाजार मूल्य पर आधारित हैं। सीएसओ द्वारा आँकड़े निरन्तर संशोधित हो रहे हैं तथा आँकड़े वृहत आर्थिक निष्पादन के साथ वित्तीय निष्पादन की तुलना को दर्शाने के लिए निमित्त किये गये हैं।

प्रतिशत था। इसी अवधि के दौरान सकल कर राजस्व में अप्रत्यक्ष करों का अंश लगभग 45 प्रतिशत था। जीडीपी वि.व. 09 में ₹ 56.30 लाख करोड़ से बढ़कर वि.व. 13 में ₹ 101.13 लाख करोड़ हो गया जबकि अप्रत्यक्ष कर वि.व. 09 में ₹ 2.70 लाख करोड़ से बढ़कर वि.व. 13 में ₹ 4.75 लाख करोड़ हो गया।

तालिका 1.2: राजस्व प्राप्तियां

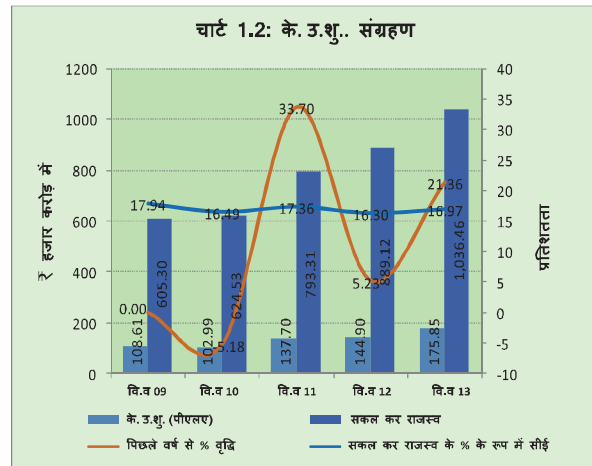
वर्ष	सकल कर राजस्व (जीटीआर)	अप्रत्यक्ष कर राजस्व#	जीडीपी	₹ करोड़	
				जीटीआर के % के रूप में	जीडीपी के % के रूप में
वि.व.09	6,05,298	2,69,988	56,30,063	44.60	4.80
वि.व.10	6,24,527	2,45,373	64,77,827	39.29	3.79
वि.व.11	7,93,307	3,45,371	77,95,314	43.54	4.43
वि.व.12	8,89,118	3,92,674	90,09,722	44.16	4.36
वि.व.13	10,36,460	4,74,728	1,01,13,281	45.80	4.69

टिप्पणी : कर प्राप्तियों के आँकड़े संबंधित वर्षों के संघ वित्त लेखों के अनुसार हैं, 2012-13 के आँकड़े अनंतिम हैं।

मुख्य अप्रत्यक्ष कर घटक अर्थात सीमा शुल्क, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, सेवा कर और वस्तुओं और सेवाओं पर अन्य कर सम्मिलित है।

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क की वृद्धि - प्रवृत्ति और संरचना

1.7 चार्ट 1.2 और तालिका 1.3 वि.व. 09 से वि.व. 13 के दौरान केन्द्रीय उत्पाद शुल्क संग्रहणों में वृद्धि दर्शाता है। वि.व. 10 को छोड़कर केन्द्रीय उत्पाद शुल्क ने सकारात्मक वृद्धि दर्शायी है। वि.व. 13 के दौरान, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क संग्रहण में पिछले वर्ष की तुलना में 21.36 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। 2012-13 के बजट में राजस्व में 2011-12 से 29.1 प्रतिशत की वृद्धि की परिकल्पना की गई थी। 2012-13 के आर्थिक सर्वेक्षण⁶ ने स्पष्ट किया कि वृद्धि तथ्यों जैसे प्रभावी दर में वृद्धि, रियायती दरें और गैर पेट्रोलियम उत्पादों पर उत्पाद शुल्क की कम



⁶ 2012-13 का आर्थिक सर्वेक्षण, पृष्ठ 63

दर, और आटोमोबाइल की कुछ श्रेणियों, कुछ विशिष्ट 'सिगरेट और तम्बाकू उत्पादों के उत्पाद शुल्क की दर में वृद्धि के कारण मानी गई थी। श्रेष्ठ 20 वस्तुओं से राजस्व संग्रहण का विश्लेषण भी दर्शाता है कि वि.व. 13 के दौरान 'अन्य तम्बाकू उत्पादों' और 'भट्टी तेल' को छोड़कर सभी वस्तुओं से राजस्व संग्रहण में वृद्धि हुई थी। सकल कर राजस्व में केन्द्रीय उत्पाद शुल्क का अंश 16 से 18 प्रतिशत के बीच था जबकि जीडीपी में यह 1.6 से 1.9 प्रतिशत के बीच था।

तालिका 1.3: केन्द्रीय उत्पाद शुल्क संग्रहणों की वृद्धि

वर्ष	सीई (पीएलए)	पिछले वर्ष की तुलना में % वृद्धि	जीडीपी	जीडीपी के रूप में सीई	₹ करोड़	
					सकल कर राजस्व	सकल कर राजस्व के रूप में सीई
वि.व.09	1,08,613	-	56,30,063	1.93	6,05,298	17.94
वि.व.10	1,02,991	(-)5.18	64,77,827	1.59	6,24,527	16.49
वि.व.11	1,37,701	33.70	77,95,313	1.77	7,93,307	17.36
वि.व.12	1,44,901	5.23	90,09,722	1.61	8,89,118	16.30
वि.व.13	1,75,845	21.36	1,01,13,281	1.74	10,36,460	16.97

स्रोत: संबंधित वर्षों के संघ वित्त लेखे; वि.व. 13 के आँकड़े अनंतिम हैं।

अप्रत्यक्ष कर घटक - तुलनात्मक प्रदर्शन

1.8 तालिका 1.4 वित्तीय वर्ष 09 से वित्तीय वर्ष 13 की अवधि के लिए जीडीपी की तुलना में विभिन्न अप्रत्यक्ष घटकों के राजस्व और प्रक्षेप वृद्धि पथ का तुलनात्मक प्रदर्शन दर्शाती है। पांच वर्षों के दौरान सभी घटकों ने भिन्न वृद्धि दर्शायी।

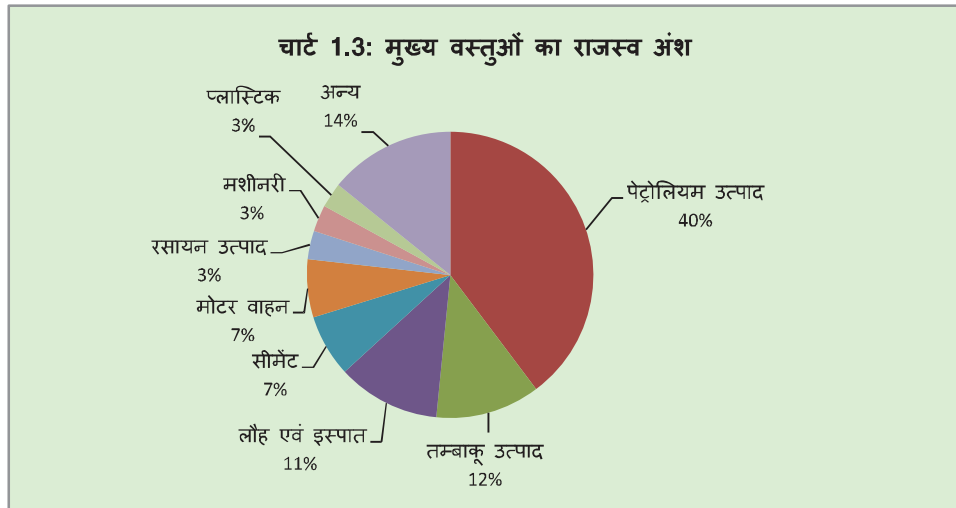
तालिका 1.4: अप्रत्यक्ष कर - जीडीपी की प्रतिशतता

वर्ष	जीडीपी	सीमा शुल्क राजस्व	केन्द्रीय उत्पाद शुल्क राजस्व	सेवा कर राजस्व	₹ करोड़		
					जीडीपी की प्रतिशतता के रूप में सीमा शुल्क राजस्व	जीडीपी की प्रतिशतता के रूप में केन्द्रीय उत्पाद शुल्क राजस्व	जीडीपी की प्रतिशतता के रूप में सेवा कर राजस्व
वि.व. 09	56,30,063	99,879	1,08,613	60,941	1.77	1.93	1.08
वि.व. 10	64,77,827	83,324	1,02,991	58,422	1.29	1.59	0.90
वि.व. 11	77,95,314	1,35,813	1,37,701	71,016	1.74	1.77	0.91
वि.व. 12	90,09,722	1,49,328	1,44,901	97,509	1.66	1.61	1.08
वि.व. 13	1,01,13,281	1,65,346	1,75,845	1,32,601	1.64	1.74	1.31

स्रोत: संबंधित वर्षों के संघ वित्तीय लेखे; वि.व. 13 के लिए आँकड़े अनंतिम हैं।

शीर्ष राजस्व प्रदान करने वाली वस्तुएं

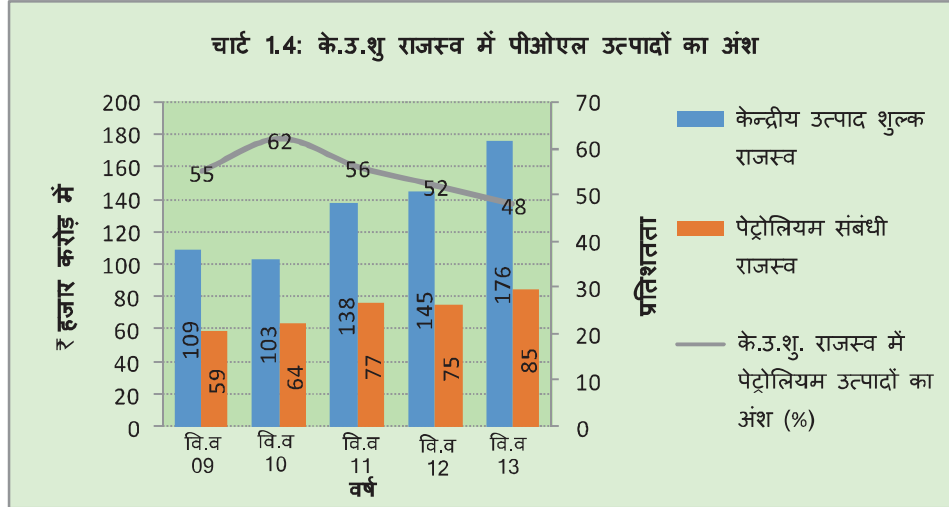
1.9 चार्ट 1.3 केन्द्रीय उत्पाद शुल्क राजस्व (वि.व. 13) में वस्तुओं के समूह का अंश दर्शाता है। आठ उच्चतम राजस्व अर्जक पेट्रोलियम (40 प्रतिशत), तम्बाकू उत्पाद (12 प्रतिशत), लौह एवं इस्पात (11 प्रतिशत), सीमेंट (7 प्रतिशत), मोटर वाहन (7 प्रतिशत), रसायन उत्पाद (3 प्रतिशत), मशीनरी (3 प्रतिशत) और प्लास्टिक उत्पाद (3 प्रतिशत) थे और इन्होंने मिलकर वि.व. 13 में कुल केन्द्रीय उत्पाद शुल्क राजस्व में 86 प्रतिशत का योगदान दिया।



स्रोत: मंत्रालय द्वारा प्रदान किए गए आँकड़े

पेट्रोलियम उत्पादों से राजस्व

1.10 पेट्रोलियम उत्पाद, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क के सबसे बड़े अंशदाता हैं। पिछले पांच वर्षों के दौरान पेट्रोलियम उत्पादों से केन्द्रीय उत्पाद शुल्क राजस्व चार्ट 1.4 में दर्शाया गया है:

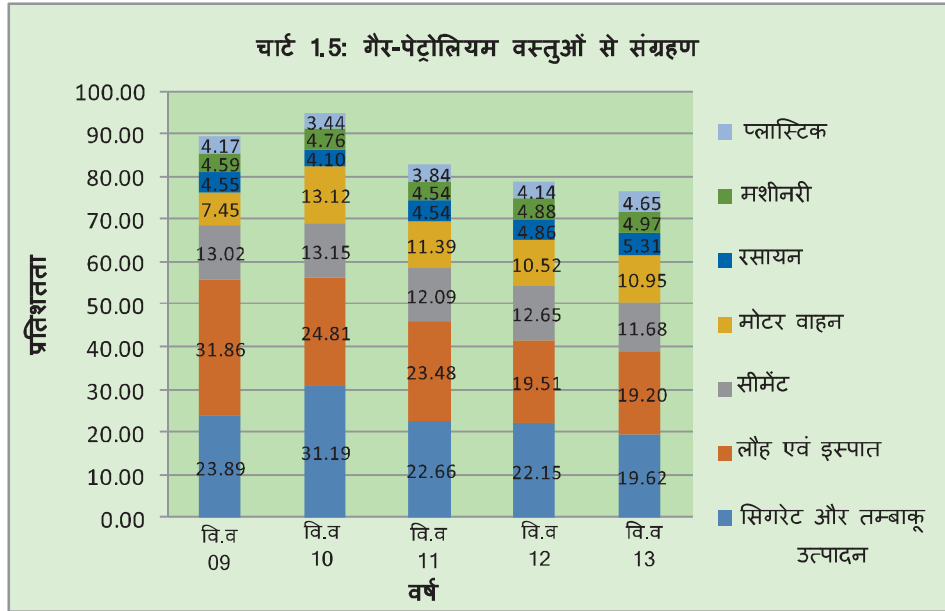


स्रोत: मंत्रालय द्वारा प्रदान किए गए आँकड़े

पेट्रोलियम क्षेत्र से केन्द्रीय उत्पाद शुल्क का अंशदान लगभग 50 प्रतिशत था। इस प्रकार आधा केन्द्रीय उत्पाद शुल्क राजस्व पेट्रोलियम क्षेत्र की कम्पनियों से आता है जिनमें से कई सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम हैं। वि.व. 13 के लिए पीओएल उत्पादों का अंश चार्ट 1.3 और 1.4 में भिन्न है। मंत्रालय को फरवरी 2014 में आंकड़ों का मिलान करने को कहा गया था।

मुख्य गैर पेट्रोलियम वस्तुओं का योगदान

1.11 चार्ट 1.5 केन्द्रीय उत्पाद शुल्क राजस्व में मुख्य गैर पेट्रोलियम उत्पादों का अंश दर्शाता है। जैसा कि चार्ट से देखा जा सकता है, सिगरेट एवं तम्बाकू उत्पाद, लौह एवं इस्पात, सीमेंट और मोटर वाहन गैर पेट्रोलियम उत्पादों में केन्द्रीय उत्पाद शुल्क राजस्व के मुख्य अंशदाता हैं।

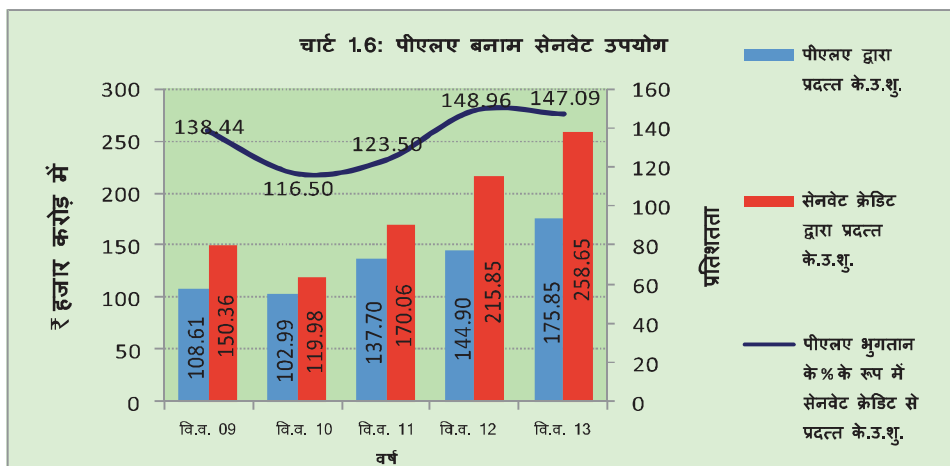


स्रोत: मंत्रालय द्वारा प्रदान किए गए आँकड़े

सेनवेट क्रेडिट

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क की तुलना में उपयोग किया गया सेनवेट क्रेडिट

1.12 एक निर्माता उत्पादन सामग्री या पूंजीगत माल पर प्रदत्त केन्द्रीय उत्पाद शुल्क के साथ-साथ, उसके निर्माण कार्य से संबंधित इनपुट सेवाओं पर अदा किए गए सेवाकर के क्रेडिट का लाभ ले सकता है तथा इस प्रकार लिए गये क्रेडिट का उपयोग केन्द्रीय उत्पाद शुल्क के भुगतान में कर सकता है। चार्ट 1.6 तथा तालिका 1.5 वि.व. 09 से वि.व. 13 के दौरान नगदी (पीएलए) तथा सेनवेट क्रेडिट द्वारा केन्द्रीय उत्पादन शुल्क संग्रहण की वृद्धि दर्शाती है।



स्रोत: मंत्रालय द्वारा प्रस्तुत आँकड़े

तालिका 1.5: केन्द्रीय उत्पाद शुल्क प्राप्तियां: पीएलए तथा सेनवेट का उपयोग

वर्ष	पीएलए द्वारा प्रदत्त		सेनवेट क्रेडिट* द्वारा प्रदत्त		पीएलए भुगतान के % के रूप में सेनवेट क्रेडिट से प्रदत्त के.उ.शु.
	के.उ.शु.		के.उ.शु.		
	राशि	पिछले वर्ष से % वृद्धि	राशि	पिछले वर्ष से % वृद्धि	
वि.वि.09	1,08,613	-	1,50,361	-	138.44
वि.वि.10	1,02,991	(-)5.18	1,19,982	(-)20.19	116.50
वि.वि.11	1,37,701	33.70	1,70,058	41.74	123.50
वि.वि.12	1,44,901	5.23	2,15,849	26.93	148.96
वि.वि.13	1,75,845	21.36	2,58,648	19.83	147.09

स्रोत: *मंत्रालय द्वारा प्रस्तुत आँकड़े

सेनवेट क्रेडिट से शुल्क भुगतान में वृद्धि हुई तथा वि.व. 12 में यह पीएलए के लगभग 149 प्रतिशत पर पहुँच गया। सामान्यता, पीएलए के माध्यम से वास्तविक प्राप्तियों की तुलना में सेनवेट क्रेडिट का लाभ लेने में तेजी से वृद्धि हुई है। मंत्रालय के अनुसार, सेनवेट क्रेडिट के उपयोग में वृद्धि के लिए प्रमुख कारण केन्द्रीय उत्पाद शुल्क के भुगतान में सेवा कर क्रेडिट का प्रति-उपयोग था। हमने वर्तमान रिपोर्ट में, हमारी जांच के दौरान पाए गए सेनवेट क्रेडिट का गलत लाभ उठाने/उपयोग करने जैसे ₹ 149.02 करोड़ के सेनवेट संबंधित 34 मामलों सम्मिलित किए हैं।

1.13 तालिका 1.6 में हाल ही के वर्षों में वस्तु-वार सेनवेट क्रेडिट का लाभ लेना दर्शाया गया है।

तालिका 1.6: सेनवेट क्रेडिट का उपयोग करने वाली मुख्य वस्तुएं

वस्तु समूह	₹ करोड़				
	वि.व. 09	वि.व. 10	वि.व. 11	वि.व. 12	वि.व. 13
लौह एवं इस्पात - अन्य इस्पात संयंत्र	18104	13572	19145	24790	33050
लौह और इस्पात की वस्तुएं	8401	6018	8471	9770	12032
लौह एंड इस्पात - समेकित इस्पात संयंत्र	7837	5305	7076	10785	11958
यात्रियों के परिवहन हेतु मोटर कार एवं अन्य मोटर वाहन	8628	8009	11377	15150	19397
अन्य सभी मोटर वाहन	9187	8080	11924	14388	17789
प्लास्टिक तथा उससे निर्मित वस्तुएं	9588	7331	10795	12658	16810
अध्याय 84 के अंतर्गत आने वाली अन्य मर्दे - मशीनरी	9732	7117	9963	12432	14202
पेट्रोलियम उत्पाद	5426	6028	7512	9757	11369
कार्बनिक रसायन	6463	4864	6807	8241	10766
तांबा तथा उसकी वस्तुएं	3184	2551	4509	4917	6176
ऐल्यूमीनियम तथा उसकी वस्तुएं	3340	2562	3758	4607	5672

स्रोत: मंत्रालय द्वारा प्रस्तुत आँकड़े

यह पाया गया कि सभी वस्तुओं में सेनवेट के प्रयोग में वृद्धि हुई है। वि.व. 13 के दौरान मोटर कार, प्लास्टिक तथा लौह एवं इस्पात क्षेत्र में सेनवेट का उपयोग सबसे अधिक था। सेनवेट क्रेडिट का उपयोग करने वाली वस्तुओं में पेट्रोलियम क्षेत्र आठवें स्थान पर था।

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क में बजटीय मुद्दे

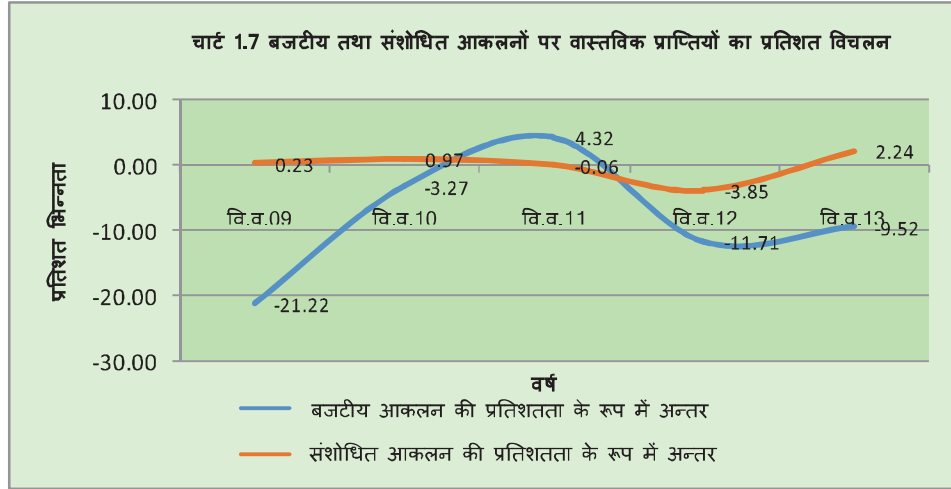
1.14 तालिका 1.7 केन्द्रीय उत्पाद शुल्क प्राप्तियों के लिए बजटीय आकलन तथा तदनुसूची वास्तविक आंकड़ों की तुलना दर्शाती है।

तालिका 1.7: केन्द्रीय उत्पाद शुल्क-बजटीय आकलन और वास्तविक प्राप्तियां

वर्ष	बजट आकलन #	संशोधित आकलन #	वास्तविक प्राप्तियां *	₹ करोड़	
				बजटीय आकलन की प्रतिशतता के रूप में अन्तर	संशोधित आकलन की प्रतिशतता के रूप में अन्तर
वि.व. 09	1,37,874	1,08,359	1,08,613	(-)21.22	0.23
वि.व. 10	1,06,477	1,02,000	1,02,991	(-)3.27	0.97
वि.व. 11	1,32,000	1,37,778	1,37,701	4.32	(-)0.06
वि.व. 12	1,64,116	1,50,696	1,44,901	(-)11.71	(-)3.85
वि.व. 13	1,94,350	1,71,996	1,75,845	(-)9.52	2.24

स्रोत: संबंधित वर्षों के *संघ वित्त लेखे और # प्राप्त बजट दस्तावेज

वास्तविक प्राप्तियां वि.व. 11 को छोड़कर बजट आकलनों की अपेक्षा कम थीं। वि.व. 09 में वास्तविक संग्रहण और बजट आकलनों के बीच अन्तर, महत्वपूर्ण रूप से काफी अधिक, 21 प्रतिशत था। वि.व.11 में संग्रहण बजटीय आकलनों से 4.32 प्रतिशत तक अधिक हो गया था। चार्ट 1.7 बजटीय आकलनों पर वास्तविक प्राप्तियों के प्रतिशत विचलन को दर्शाता है।



मंत्रालय ने स्पष्ट किया कि बजटीय आकलन मुख्य रूप से कर नीति, बजटीय साधन तथा जीडीपी में संभाव्य वृद्धि जैसे कारणों पर आधारित है। इन आर्थिक मानदण्डों का वास्तविक व्यवहार इसके आरम्भ होने से पहले निर्मित आकलन से भिन्न हो सकता है और फलस्वरूप वास्तविक निवल प्राप्ति बजटीय आकलन की तुलना में कम/अधिक हो सकती है।

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क प्रशासन में प्रणालीगत मुद्दे

कर व्यय मुद्दे

1.15 कराधान, किसी सरकार के अपने व्यय की निधि हेतु राजस्व सृजन का मुख्य स्रोत है। सामूहिक कर आधार तथा कर की प्रभावी दर मुख्यतः प्राप्त राजस्व राशि का निर्धारण करती है। विशेष कर दरें, छूट कटौती, रियायत, आस्थगित अदायगी तथा क्रेडिट कुछ कारक हैं जो सामूहिक कर आधार और प्रभावी कर की दर को निर्धारित करते हैं और उन्हें “कर प्राथमिकता” कहा जाता है। कर प्राथमिकता को अधिमान्य कर दाताओं को सहायता भुगतान के रूप में देखा जा सकता है। “कर व्यय के” रूप में संदर्भित ऐसे अन्तर्निहित भुगतान कर संबंधी कानून में लागू व्यय कार्यक्रम हैं।

उत्पाद शुल्क का उद्ग्रहण, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1985 की प्रथम तथा द्वितीय अनुसूची में विनिर्दिष्ट टैरिफ दरों के अनुसार लगाया जाता है। केन्द्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1944 की धारा 5ए(1) के तहत केन्द्र सरकार सार्वजनिक हित में छूट अधिसूचना जारी कर सकती है जिससे कि अनुसूची में निर्धारित टैरिफ दर से कम शुल्क दरों जिन्हें “प्रभावी दरें” कहा

जाता है, के रूप में निर्धारण किया जा सकता है। शुल्क, जिसका भुगतान छूट अधिसूचना के बिना करना पड़ता और सुसंगत अधिसूचना की शर्तों के अनुसार अदा किए गए वास्तविक शुल्क के मध्य का अन्तर बजट दस्तावेजों में “परित्यक्त राजस्व” के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

उपरोक्त धारा 5ए(1) के तहत सामान्य छूट अधिसूचनाएं जारी करने के अधिकार के अलावा केन्द्र सरकार को केन्द्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम की धारा 5ए(2) के अनुसार अपवादात्मक प्रवृत्ति की परिस्थितियों के तहत अलग-अलग मामलों के आधार पर उत्पाद शुल्क से छूट प्रदान करने के लिए विशेष आदेश जारी करने का भी अधिकार है। परित्यक्त राजस्व विवरण में परित्यक्त शुल्क आंकड़ों में विशेष छूट आदेशों के जारी होने के कारण संग्रहीत न किए गए शुल्क के संबंध में परित्यक्त राजस्व के अनुमान को शामिल नहीं किया जाता है।

मंत्रालय ने कहा कि सामान्य रियायतें जो केन्द्रीय सरकार की राजकोषीय नीति का महत्वपूर्ण भाग हैं, के विपरित केन्द्रीय उत्पाद शुल्क अधिनियम की धारा 5ए(2) के अन्तर्गत रियायत आदेश जारी करने का मुख्य उद्देश्य विशिष्ट प्रवृत्ति की परिस्थितियों से निपटना है। जैसे विशेष रियायत आदेश के जारी होने के कारण परित्यक्त शुल्क को परित्यक्त राजस्व के आंकड़ों में परिकलन नहीं किया जा रहा है।

विशिष्ट प्रकार का व्यय होने के नाते यह अधिक प्रासंगिक है कि इस परित्यक्त राजस्व को कुल कर व्यय परिकलित करने में शामिल किया जाना चाहिए तथा इसे संसद को सूचित करना चाहिए।

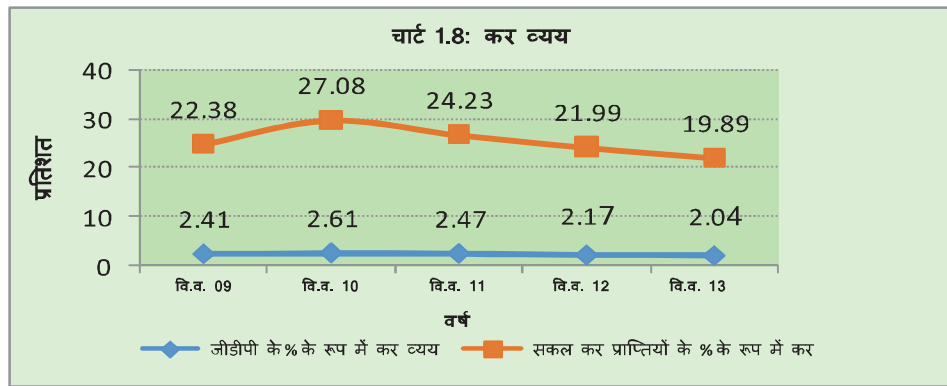
1.16 तालिका 1.8 संघ सरकार के बजट दस्तावेजों में यथा सूचित हाल के वर्षों में केन्द्रीय उत्पाद शुल्क संबंधी कर व्यय के आँकड़े दर्शाती है। केन्द्रीय उत्पाद शुल्क के संबंध में वि.व.13 के लिए कर व्यय ₹ 2,06,188 करोड़ (सामान्य छूट के रूप में ₹ 1,87,688 करोड़ और क्षेत्र आधारित छूटों के रूप में ₹ 18,500 करोड़) था जो कि केन्द्रीय उत्पाद शुल्क से राजस्व का लगभग 117 प्रतिशत है।

तालिका 1.8: कर व्यय (केन्द्रीय उत्पाद शुल्क)

वर्ष	*कुल कर व्यय(टीई)	जीडीपी के % के रूप में कर व्यय	रु करोड़	
			केन्द्रीय उत्पाद शुल्क के % के रूप में कर व्यय	सकल कर प्राप्तियों के % के रूप में कर व्यय
वि.व. 09	1,35,496	2.41	124.75	22.38
वि.व. 10	1,69,121	2.61	164.21	27.08
वि.व. 11	1,92,227	2.47	139.60	24.23
वि.व. 12	1,95,590	2.17	134.98	21.99
वि.व. 13	2,06,188	2.04	117.26	19.89

*स्रोत: बजटीय दस्तावेज

चार्ट 1.8 केन्द्रीय उत्पाद राजस्व तथा जीडीपी के प्रतिशत के रूप में कर व्यय को दर्शाता है। चार्ट



1.17 2013 की प्रतिवेदन संख्या 17 में, लेखापरीक्षा ने बताया कि सरकार को उपयुक्त समयावधि के अन्दर किसी विशेष कारण के प्रोत्साहन पर लक्ष्य की विशेष रियायत के साथ-साथ छूट सहित सामान्य नीति स्तर रियायत के परिणामों का विश्लेषण करने के लिए प्रयत्न करना चाहिए। ऐसे विश्लेषण को बजट दस्तावेजो के भाग या विशेष रिपोर्ट जो कि सार्वजनिक डोमेन में उपलब्ध हो, के रूप में उपलब्ध कराया जाना आवश्यक है। ऐसी प्रणाली पारदर्शिता लायेगी और नियमित/तदर्थ कर रियायतों की आवश्यकता पर सार्वजनिक वाद-विवाद को सक्षम बनाएगी।

मंत्रालय ने बताया कि विभिन्न नीतिगत उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु सार्वजनिक हित में जारी रियायतों को उनकी कुशलता के मूल्यांकन हेतु समय-समय पर

समीक्षित किया जाता है तथा जहां आवश्यक हो, वहाँ उपचारात्मक कार्रवाई की जाती है। तथापि, यह ज्ञात नहीं है कि ऐसी समीक्षा प्रलेखित की जाती है तथा संसद को प्रस्तुत की जाती है। सार्वजनिक डोमेन में ऐसा कोई दस्तावेज उपलब्ध नहीं है।

निर्धारिती आधार

1.18 “निर्धारिती” से अभिप्राय ऐसे व्यक्ति से है जो निर्धारित शुल्क के भुगतान का दायी है या उत्पाद शुल्क योग्य माल का निर्माता अथवा उत्पादक है अथवा निजी माल गोदाम, जिसमें उत्पाद शुल्क योग्य माल संग्रहित किया जाता है, का पंजीकृत व्यक्ति है तथा इसमें ऐसे व्यक्ति का प्राधिकृत एजेंट भी शामिल है। एक एकल कानूनी सत्व (कम्पनी अथवा व्यक्ति) की विनिर्माण इकाईयों के स्थान पर आधारित कई निर्धारिती पहचान हो सकती हैं। तालिका 1.9 पिछले दस वर्षों के दौरान केन्द्रीय उत्पाद शुल्क निर्धारितियों की संख्या बताती हैं:

तालिका 1.9: केन्द्रीय उत्पाद शुल्क में निर्धारितियों की संख्या

वर्ष	निर्धारितियों की संख्या	पिछले वर्ष की तुलना में % वृद्धि
वि.व. 09	2,95,222	-
वि.व. 10	3,15,171	6.76
वि.व. 11	3,44,753	9.39
वि.व. 12	3,35,759	-2.61
वि.व. 13	3,48,294	3.73

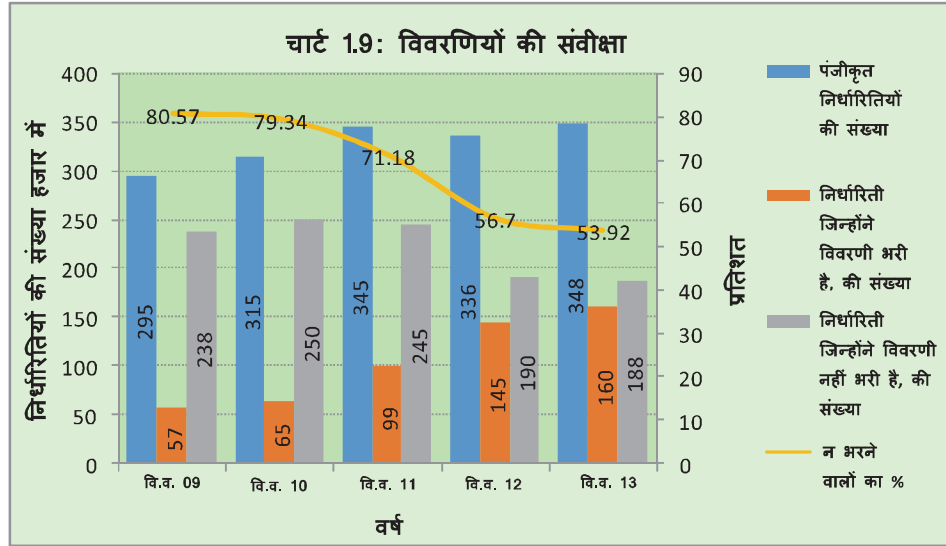
स्रोत: मंत्रालय द्वारा प्रस्तुत आँकड़े⁷

100 शीर्षस्थ निर्धारितियों (राजस्व योगदान के अनुसार) जिनमें तेल क्षेत्र की कम्पनियां, तम्बाकू उत्पाद, ऑटोमोबाइल, सीमेन्ट, स्टील तथा टायर निर्माता शामिल हैं, ने केन्द्रीय उत्पाद शुल्क राजस्व में 70 प्रतिशत का योगदान दिया।

निर्धारितियों द्वारा दाखिल की गई विवरणियों द्वारा कर भुगतान की सूचना

1.19 चार्ट 1.9 पंजीकृत निर्धारितियों तथा उन निर्धारितियों जिन्होंने रिटर्न भरा है, की संख्या दर्शाता है।

⁷ दिनांक 11.10.2013 के मंत्रालय के पत्र एफ. संख्या 233/05/2013-सीएक्स 7 द्वारा



स्रोत: मंत्रालय द्वारा प्रस्तुत आँकड़े⁸

स्व-निर्धारण के आरम्भ होने के बाद, निर्धारितों द्वारा भरी गई विवरणी सरकार को भुगतान किए केन्द्रीय उत्पाद शुल्क की शुद्धता की जांच करने का एकमात्र उपकरण है। चार्ट 1.9 दर्शाता है कि पचास प्रतिशत से अधिक पंजीकृत निर्धारितों विवरणी नहीं भर रहे हैं। सभी पंजीकृत निर्धारितों द्वारा विवरणी भरने को सुनिश्चित करने के लिए एक मजबूत तंत्र के निर्माण की आवश्यकता है।

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क में कर प्रशासन

नीतिगत योजना को अंतिम रूप देना

1.20 सीबीईसी ने आगामी 5 वर्षों के लिए अपनी नीतिगत योजना⁹ को अन्तिम रूप देने के लिए स्वयं लक्ष्य तिथि (15 दिसम्बर 2013) रखी। नीतिगत योजना को अभी स्वीकृत किया जाना है। चूंकि नीतिगत योजना अपने लक्ष्य के साथ-साथ अपने बताए दृष्टिकोण को पूरा करने में सीबीईसी (तथा अधीनस्थ संगठन) की प्रगति को मार्गदर्शित करेगी। अतः इस दिशा में सम्बंधित कार्य किए जाना आवश्यक है।

⁸ दिनांक 11.10.2013 के मंत्रालय के पत्र एफ. संख्या 233/05/2013-सीएक्स 7 द्वारा

⁹ 2012-13 के लिए आरएफडी, खण्ड 2 तथा 3

विवरणियों की संवीक्षा

1.21 सीबीईसी ने 1996 में केन्द्रीय उत्पाद शुल्क के संबंध में स्व-निर्धारण प्रारम्भ किया। स्व-निर्धारण के प्रारम्भ के साथ, विभाग ने विवरणियों की संवीक्षा एक मजबूत अनुपालन सत्यापन तंत्र भी प्रदान किया। निर्धारण, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क अधिकारियों, जिन्हें शुल्क भुगतान की यथार्थता सुनिश्चित करने के लिए केन्द्रीय उत्पाद शुल्क विवरणियों की संवीक्षा करनी होती है, का मूल कार्य है। केन्द्रीय उत्पाद शुल्क विवरणियों की संवीक्षा मैनुअल के अनुसार, रैंज अधिकारी द्वारा डिवीजन के क्षेत्राधिकारी सहायक/उप आयुक्त को प्राप्त तथा संवीक्षित विवरणियों की संख्या के संदर्भ में एक मासिक रिपोर्ट प्रस्तुत करनी है। संवीक्षा दो चरणों में की जाती है अर्थात् प्राथमिक संवीक्षा एसीईएस द्वारा की जाती है एवं विस्तृत संवीक्षा जो एसीईएस अथवा अन्यथा द्वारा चिन्हित विवरणियों पर मैनुअली की जाती है।

तालिका 1.10 पिछले तीन वर्षों के दौरान एसीईएस द्वारा समीक्षा एवं शोधन (आर एंड सी) हेतु चिन्हित किये गए केन्द्रीय उत्पाद शुल्क विवरणियों तथा निपटायी गई विवरणियों की संख्या के संबंध में विभाग के प्रदर्शन को दर्शाती है।

तालिका 1.10: केन्द्रीय उत्पाद शुल्क विवरणियों की समीक्षा एवं शोधन

वर्ष	भरे गए विवरणियों की संख्या	समीक्षा एवं शोधन हेतु भेजे गए विवरणियों की सं.	समीक्षा एवं शोधन के पश्चात् निपटायी गई विवरणियों की सं.	समीक्षा एवं शोधन हेतु लम्बित विवरणियों की सं.
वि.व. 11	7,39,789	7,20,027	1,52,155	5,67,872
वि.व. 12	17,00,773	16,39,176	6,95,098	9,44,078
वि.व. 13	29,08,856	27,78,012	19,67,536	8,10,476

स्रोत: मंत्रालय द्वारा प्रस्तुत किए गए आँकड़े

स्व-आकलन की शुरुआत के बाद, भुगतान योग्य शुल्क की सत्यता सुनिश्चित करने के लिए विवरणियों की संवीक्षा (एवं आकलन की) तथा आंतरिक लेखापरीक्षा ही विभाग के पास उपलब्ध मुख्य तंत्र हैं। केन्द्रीय उत्पाद शुल्क विवरणी संवीक्षा मैनुअल केन्द्रीय उत्पाद शुल्क विवरणियों के केवल 5 प्रतिशत की विस्तृत संवीक्षा निर्धारित करती है। इसका अर्थ है कि आकलन के एक बहुत ही छोटे भाग की विस्तार से संवीक्षा किये जाने की आवश्यकता होती है।

1.22 तालिका 1.11 पिछले तीन वर्षों के दौरान केन्द्रीय उत्पाद शुल्क विवरणी की विस्तृत संवीक्षा के संबंध में विभाग के प्रदर्शन को दर्शाती है।

तालिका 1.11 केन्द्रीय उत्पाद शुल्क विवरणियों की विस्तृत संवीक्षा

वर्ष	विस्तृत संवीक्षा हेतु चिन्हित विवरणियों की संख्या#	विवरणियों की सं. जहाँ विस्तृत संवीक्षा की गई थी	संवीक्षा की गई विवरणियों की संख्या जहाँ कमियाँ पाई गई।	मामलों की सं. जहाँ अनुवर्ती कार्यवाही की गई थी	विवरणियों की सं. जहाँ विस्तृत संवीक्षा लम्बित थी	लंबन की अवधि-वार विघटन		
						6 माह से 1 वर्ष के मध्य से लम्बित विवरणियाँ	1 से 2 वर्ष के मध्य से लम्बित विवरणियाँ	2 वर्ष से अधिक के लिए लम्बित विवरणियाँ
वि.व. 11	19735	10819	262	151	8506	8281	235	16
वि.व. 12	27404	13055	250	231	14142	13701	452	20
वि.व. 13	50039	38900	557	463	10144	8108	1684	240

स्रोत: मंत्रालय द्वारा प्रस्तुत किये गए आँकड़े, #वर्तमान वर्ष अथवा पिछले वर्षों में भरे गए विवरणियाँ

इस तथ्य के बावजूद कि विवरणियों के केवल 5 प्रतिशत की विस्तार से संवीक्षा की जानी है, तालिका 1.22 दर्शाती है कि विवरणियों की एक बड़ी संख्या संवीक्षा हेतु लम्बित थी। अवधि-वार विघटन दर्शाता है कि 1924 विवरणियाँ एक वर्ष से अधिक से लम्बित थे।

2013 के लेखापरीक्षा प्रतिवेदन सं. 17 में, मंत्रालय ने बताया कि निर्धारित आधार में वृद्धि तथा अनिवार्य इलेक्ट्रॉनिक फाइलिंग के कारण, संवीक्षा के लिए विवरणियों की संख्या बढ़ गई है एवं स्टाफ की कमी के चलते विस्तृत संवीक्षा पूरा करना संभव नहीं था। केन्द्रीय उत्पाद शुल्क की विवरणियों के केवल 5 प्रतिशत की संवीक्षा के मानदण्ड के बावजूद विस्तृत संवीक्षा पूरी ना करने की विभाग की अरुचि तर्कसंगत नहीं है। लेखापरीक्षा द्वारा विवरणियों की संवीक्षा के एक जारी अध्ययन से पता चला कि विभाग द्वारा विवरणियों की संवीक्षा अभी भी एक उपेक्षित क्षेत्र है जो राजस्व संग्रह के लिए एक गंभीर चुनौती है।

प्रतिदाय

1.23 तालिका 1.12 पिछले तीन वर्षों के दौरान विभाग के प्रतिदाय संबंधी प्रदर्शन के विवरण को दर्शाती है।

तालिका 1.12 पिछले तीन वर्षों के दौरान केन्द्रीय उत्पाद शुल्क के संबंध में प्रतिदाय

वर्ष	अथशेष	वर्ष के दौरान प्राप्तियाँ				वर्ष के दौरान निपटान				अन्तः शेष		
		मामलों की सं.	राशि	मामलों की सं.	राशि	वर्ष के दौरान संस्वीकृत प्रतिदाय	90 दिनों के भीतर निपटाए गए मामले	लम्बित निपटान	मामले जहाँ ब्याज का भुगतान किया गया	भुगतान किया गया	मामलों की सं.	राशि
वि.व. 11	32,400	3,094.51	153,247	16,342.63	1,48,652	14,849.57	1,43,787	4,865	130	3.66	36,995	4,587.57
वि.व. 12	36,995	4,587.57	167,478	27,627.16	1,65,229	27,137.70	1,58,538	6,691	18	7.01	39,244	5,077.03
वि.व. 13	39,244	5,077.03	175,902	21,795.55	1,70,797	21,138.72	1,64,669	6,128	20	15.47	44,349	5,733.86

स्रोत: मंत्रालय द्वारा उपलब्ध कराये गए आँकड़ें¹⁰

तालिका दर्शाती है कि मामलों की संख्या जहाँ ब्याज का भुगतान किया गया था, पिछले तीन वर्षों में 130 से 20 तक कम हो गई थी। यद्यपि, ब्याज भुगतान ₹ 3.66 करोड़ से ₹ 15.47 करोड़ तक बढ़ गया। यह दर्शाता है कि प्रतिदाय प्रदान करना एक उपेक्षित क्षेत्र है। बोर्ड को विश्लेषण करने की आवश्यकता है कि क्यों इसे मात्र 20 मामलों में ₹ 15.47 करोड़ के बड़े ब्याज का भुगतान करना पड़ा। इसके अतिरिक्त, 2013 के हमारे लेखापरीक्षा प्रतिवेदन सं.17 में, हमने दर्शाया था कि मंत्रालय तथा प्रधान मुख्य लेखा नियंत्रक¹¹ द्वारा उपलब्ध कराए गए प्रतिदायों के आँकड़ों में अन्तर था। वि.व. 11 तथा वि.व. 12 के आँकड़ों की तुलना दर्शाती है कि आँकड़ों के दोनों समूहों में अभी भी अन्तर है जिसे समायोजित करने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, मंत्रालय को यह स्पष्ट करने की आवश्यकता है कि प्रतिदाय में क्या शामिल है क्योंकि इसमें प्रतिदाय किये गये अतिरिक्त कर संग्रह के साथ साथ व्यापार प्रोत्साहन पर प्रतिदाय दोनों शामिल हो सकते हैं।

तालिका 1.13 बोर्ड द्वारा किसी प्रतिदाय मामले के निपटान हेतु निर्धारित अवधि, 90 दिनों से अधिक के लिए लम्बित प्रतिदाय मामलों के अवधि वार विघटन को दर्शाती है।

¹⁰ दिनांक 26.11.2013 के मंत्रालय के पत्र एफ सं. 233/17/2013-सीएक्स 7 द्वारा

¹¹ 2013 के लेखापरीक्षा प्रतिवेदन सं. 17 का पैराग्राफ 1.62

तालिका 1.13: 90 दिनों से अधिक से लम्बित प्रतिदाय मामलो का अवधि-वार विघटन

वर्ष	करोड़ ₹					
	प्रतिदाय आवेदन के प्रप्ति की तिथि से 90 दिनों से 180 दिनों के बीच के लिए लम्बित मामलों		प्रतिदाय आवेदन के प्राप्ति की तिथि से 180 दिनों से एक वर्ष के मध्य के लिए लम्बित मामले		प्रतिदाय आवेदन की प्राप्ति की तिथि से एक वर्ष से अधिक के लिए लम्बित मामले	
	मामलों की सं.	राशि	मामलों की सं.	राशि	मामलों की सं.	राशि
वि.व. 11	6,879	1,111.24	829	161.16	1,188	602.89
वि.व. 12	7,016	1,133.77	445	57.73	1,010	181.30
वि.व. 13	8,539	1,653.03	445	831.52	1,004	91.89

स्रोत: मंत्रालय द्वारा उपलब्ध कराए गए आँकड़े

1.24 यदि प्रतिदायों की संस्वीकृति/चुकाने में विलम्ब हो, तो निर्धारित दरों पर ब्याज भुगतान योग्य होता है। ऐसा ब्याज भुगतान भारत की संचित निधि पर भारित होने के नाते, उचित बजटीय तंत्र के माध्यम से होना चाहिए। बोर्ड को लम्बे समय से लम्बित प्रतिदाय मामलों की जाँच-पड़ताल करनी चाहिए तथा ब्याज भुगतान के उत्तरदायित्व को टालने के लिए ऐसे मामलों के निपटान हेतु निर्देश जारी करने चाहिए।

हमने देखा कि लम्बित प्रतिदायों पर भुगतान किये गए ब्याज को लेखों में राजस्व में कमी के रूप में लिया गया था¹²। इस व्यय हेतु संसद से पूर्व स्वीकृति नहीं ली गई थी। संघ लेखाओं के साथ साथ प्रत्यक्ष कर प्रशासन पर हमारे लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों ने पहले भी इस मुद्दे पर टिप्पणी की है।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की 2013 की लेखापरीक्षा प्रतिवेदन सं. 17 में, मंत्रालय ने स्वीकार किया (मार्च 2013) कि प्रतिदाय पर ब्याज के भुगतान के मामले को व्यय के रूप में दर्शाया जाना चाहिए तथा पारदर्शिता लाने हेतु संसद को सूचित किया जाना चाहिए।

लोक लेखा समिति, प्रत्यक्ष करों के संबंध में इस मुद्दे की जाँच करते समय सीएजी के विचार से सहमत थी कि ब्याज व्यय का एक मद है तथा सकल कर संग्रह से घटाया नहीं जाना चाहिए¹³। पीएसी ने दोहराया कि राजस्व विभाग को सुनिश्चित करना होगा कि प्रतिदायों पर ब्याज पर व्यय संवैधानिक

¹² संघ उत्पाद शुल्क के संस्वीकृत प्रतिदाय वित्त लेखाओं में 'प्रतिदाय कटौती' के रूप में अलग अलग उप-दीर्घ शीर्ष शुल्क के तहत संबंधित लघु शीर्षों के तहत एक उप-शीर्ष के रूप में दर्शाये गए हैं।

¹³ 2011-12 के प्रतिवेदन सं. 1 का पैराग्राफ सं. 4.1.1 - संघ सरकार - संघ सरकार के लेखे (सिविल)।

प्रावधानों के अनुसार वहन किये जाए जिसमें विशिष्ट संसदीय स्वीकृति अपेक्षित है¹⁴।

अधिनिर्णय

1.25 अधिनिर्णय केन्द्रीय उत्पाद शुल्क प्रशासन में वर्गीकरण, मूल्यांकन, प्रतिदाय दावों, देय कर/शुल्क आदि से संबंधित मुद्दों को निर्धारित करने के लिए प्राधिकृत विभागीय प्राधिकरणों के माध्यम से एक मुद्दे पर निर्णय करने की प्रक्रिया है। जब भी अनियमितताएँ देखी जाती हैं तो विभाग निर्धारितियों से 'कारण बताओं नोटिसों' (एससीएन) के रूप में माँग जारी करता है।

अधिनिर्णय हेतु लंबित बकाया मामले

1.26 हमने तालिका 1.14 में पिछले तीन वर्षों के दौरान अधिनिर्णय/वसूली के लिए बकाया उत्पाद शुल्क हेतु माँग में शामिल राशियों को दर्शाया है।

तालिका 1.14: विभागीय प्राधिकरण के पास अधिनिर्णय हेतु लम्बित मामले

वर्ष	31 मार्च को लम्बित मामले		मामलों का अवधि-वार विघटन					
			एक वर्ष से कम से लम्बित मामले		एक वर्ष से अधिक परन्तु 2 वर्षों से कम से लम्बित मामले		दो वर्षों से अधिक से लम्बित मामले	
	मामलों की सं.	राशि	मामलों की सं.	राशि	मामलों की सं.	राशि	मामलों की सं.	राशि
वि.व. 11	14,181	13,133.42	13,078	11,412.69	733	1,622.35	170	222.59
वि.व. 12	16,463	16,338.26	14,559	13,375.58	822	1,671.04	900	1,589.19
वि.व. 13	16,125	17,020.54	14,703	13,408.72	1,016	1,468.52	326	1,353.85

करोड़ ₹

स्रोत: मंत्रालय द्वारा उपलब्ध कराए गए आँकड़े¹⁵

तालिका 1.14 दर्शाती है कि 31 मार्च 2013 तक ₹ 17,020.54 करोड़ के शुल्क वाले मामले अधिनिर्णय हेतु लम्बित थे। लम्बन प्रति वर्ष बढ़ रहा है। अवधि-वार विघटन दर्शाता है कि ₹ 1,353.85 करोड़ वाले 326 मामले दो वर्षों से अधिक समय से लम्बित थे। इन मामलों की जाँच किये जाने तथा सभी लम्बे समय से लम्बित मामलों को निपटाने हेतु उपाय किये जाने की आवश्यकता है।

¹⁴ 6 फरवरी 2014 को पटल पर रखी गई वित्त मंत्रालय द्वारा संवैधानिक प्रावधानों के उल्लंघन पर प्रतिवेदन सं. 96: संसदीय अनुमोदन के बिना प्रतिदायों पर वहन किया गया व्यय।

¹⁵ दिनांक 26.11.2013 के मंत्रालय के पत्र एफ सं. 233/17/2013-सीएक्स 7 द्वारा

नीचे तालिका 1.15 दर्शाती है कि ₹ 16,140 करोड़ की अपुष्टीकृत मार्गों के साथ लम्बित कारण बताओ ज्ञापनों (एससीएन) के मामलों की संख्या पंद्रह हजार से अधिक है।

तालिका 1.15 लम्बित एससीएन की संख्या तथा सम्मिलित राशि

		करोड़ ₹												
वर्ष	पंजीकरण की विफलता	एससीएन जारी करने हेतु कारण												
		ईआर-1 रिटर्न देर से भरना		केन्द्रीय उत्पाद शुल्क का विलम्बित भुगतान		केन्द्रीय उत्पाद शुल्क का भुगतान करने में विफलता		शुल्क योग्य माल के मूल्य को छिपाना		अन्य		कुल		
		संख्या	राशि	संख्या	राशि	संख्या	राशि	संख्या	राशि	संख्या	राशि	संख्या	राशि	
वि.व. 11	30	20.16	1082	1.31	220	83.66	3260.8	4095.23	1600	1807.77	7192	4963.54	13501	11131.92
वि.व. 12	34	16.84	1914	0.06	118	81.36	3115.32	4034.3	1984	2646.31	8731	6480.97	15887	13754.31
वि.व. 13	31	9.93	2682	0.19	167	67.43	3384.07	6462.91	1800	3976.67	7779	5379.13	15811	16140.1

स्रोत: मंत्रालय द्वारा उपलब्ध कराए गए आँकड़े

अपीलों का लम्बन

1.27 निर्धारितियों को अनेक विभागीय के साथ न्यायिक अधिकरण उपलब्ध है जहाँ विभागीय प्राधिकरणों तथा निचले न्यायाधिकरणों के निर्णय के विरुद्ध अपील की जा सकती है। यहाँ तक कि विभाग भी ऐसे निर्णय के मामले में अपील के लिए जाता है जो राजस्व के विरुद्ध दिया गया हो। तालिका 1.16 पिछले तीन वर्षों के दौरान विभिन्न न्यायाधिकरणों में लम्बित मामलों को दर्शाती है।

तालिका 1.16 विभिन्न न्यायाधिकरणों में लम्बित केन्द्रीय उत्पाद शुल्क तथा सेवा कर से संबंधित अपीलें

वर्ष	न्यायाधिकरण	वर्ष के अंत में लम्बित अपीलें					
		पार्टी की अपीलों का विवरण		विभागीय अपीलों का विवरण		कुल	
		अपीलों की संख्या	शामिल राशि (₹ करोड़)	अपीलों की संख्या	शामिल राशि (₹ करोड़)	अपीलों की संख्या	शामिल राशि (₹ करोड़)
वि.व. 11	(क) आयुक्त (अपील)	20438	4207.73	3444	633.13	23882	4840.86
	ख(i) सेसटेट	28982	30566.80	17112	8997.35	46094	39564.15
	(ii) उच्च न्यायालय	7630	4886.14	7581	5996.55	15211	10882.69
	(iii) सर्वोच्च न्यायालय	750	1225.11	1925	6030.18	2675	7255.29
	(iv) कुल न्यायालय + सेसटेट	37362	36678.05	26618	21024.08	63980	57702.13
	सकल जोड़	57800	40885.78	30062	21657.21	87862	62542.99
वि.व. 12	(क) आयुक्त (अपील)	19485	4611.83	2453	381.07	21938	4992.90
	ख(i) सेसटेट	29252	39427.84	14982	9903.87	44234	49331.71
	(ii) उच्च न्यायालय	5356	4087.41	5507	5203.37	10863	9290.78
	(iii) सर्वोच्च न्यायालय	642	1060.02	1575	5896.21	2217	6956.23
	(iv) कुल न्यायालय + सेसटेट	35250	44575.27	22064	21003.45	57314	65578.72
	सकल जोड़	54735	49187.10	24517	21384.52	79252	70571.62
वि.व. 13	(क) आयुक्त (अपील)	23233	7103.14	2965	557.59	26198	7660.73
	ख(i) सेसटेट	35694	63278.29	15832	12099.51	51526	75377.80
	(ii) उच्च न्यायालय	5631	6843.69	5430	5527.35	11061	12371.04
	(iii) सर्वोच्च न्यायालय	760	1428.56	1632	5743.01	2392	7171.57
	(iv) कुल न्यायालय + सेसटेट	42355	71550.54	22894	23369.87	65249	94920.41
	सकल जोड़	65588	78653.68	25859	23927.46	91447	102581.14

स्रोत: मंत्रालय द्वारा उपलब्ध कराए गए आँकड़े

तालिका दर्शाती है कि एक लाख करोड़ से अधिक के राजस्व वाले मामले अपील में लम्बित थे। राशि प्रति वर्ष बढ़ रही है। चूँकि अपील के लम्बित होने तक राजस्व की वसूली हेतु कोई कार्यवाही प्रारंभ नहीं की जा सकती, एक लाख करोड़ रुपये के राजस्व का अवरूद्ध हो जाना चिन्ता का विषय है। जून 2010 में प्रारंभ की गई राष्ट्रीय वाद नीति इस मान्यता पर आधारित है कि सरकार एवं इसकी विभिन्न एजेन्सियाँ देश में न्यायालयों तथा ट्रिब्यूनलों में प्रमुख वादी हैं। इसका लक्ष्य सरकार को एक दक्ष एवं जिम्मेदार वादी बनाना है। वि.व. 12 का बजट भाषण सूचित करता है कि वादों को कम करने तथा

उच्च राजस्व मामलों पर ध्यान केन्द्रित करने हेतु वि.व. 11 में कदम उठाए गए थे। कर प्रभाव की सीमा, जिससे नीचे, अपील के उच्चतर न्यायालयों में सरकार द्वारा वाद जारी नहीं रखे जाएंगे, को बढ़ाने हेतु निर्देश जारी किये गए हैं। इन उपायों से राजस्व बढ़ाने में लगे संसाधनों की उत्पादकता बढ़ने की अपेक्षा की जाती है।

तालिका 1.17: पिछले तीन वर्षों के दौरान निपटाई गई अपीलें

वर्ष	न्यायाधिकरण	वर्ष के दौरान निपटाई गई अपीलें					
		पार्टी की अपीलों का विवरण		विभागीय अपीलों का विवरण		कुल	
		अपीलों की संख्या	शामिल राशि (₹ करोड़)	अपीलों की संख्या	शामिल राशि (₹ करोड़)	अपीलों की संख्या	शामिल राशि (₹ करोड़)
वि.व. 11	(क) आयुक्त (अपील)	3484	631.82	24951	4372.38	28435	5004.20
	ख(i) सेसटेट	1933	1773.06	253	3253.12	2186	5026.18
	(ii) उच्च न्यायालय	824	769.41	879	1032.75	1703	1802.16
	(iii) सर्वोच्च न्यायालय	87	784.28	29	185.44	116	969.72
	(iv) कुल न्यायालय + सेसटेट	2844	3326.75	1161	4471.31	4005	7798.06
	सकल जोड़	6328	3958.57	26112	8843.69	32440	12802.26
वि.व. 12	(क) आयुक्त (अपील)	4975	1137.87	19630	3953.69	24605	5091.56
	ख(i) सेसटेट	5427	1762.99	11313	7050.22	16740	8813.21
	(ii) उच्च न्यायालय	2874	2476.73	3806	3240.24	6680	5716.97
	(iii) सर्वोच्च न्यायालय	680	1296.60	309	862.44	989	2159.04
	(iv) कुल न्यायालय + सेसटेट	8981	5536.32	15428	11152.90	24409	16689.22
	सकल जोड़	13956	6674.19	35058	15106.59	49014	21780.78
वि.व. 13	(क) आयुक्त (अपील)	2724	502.95	21392	4315.86	24116	4818.81
	ख(i) सेसटेट	1540	840.32	5767	7300.36	7307	8140.68
	(ii) उच्च न्यायालय	687	646.34	1813	3812.23	2500	4458.57
	(iii) सर्वोच्च न्यायालय	104	1187.72	88	72.71	192	1260.43
	(iv) कुल न्यायालय + सेसटेट	2331	2674.38	7668	11185.30	9999	13859.68
	सकल जोड़	5055	3177.33	29060	15501.16	34115	18678.49

स्रोत: मंत्रालय द्वारा उपलब्ध कराए गए आँकड़े

तालिका 1.17 दर्शाती है कि विभागीय प्रयास, सार्थक होते हुए भी, मामलों के निपटान में एक घटती हुई प्रवृत्ति दर्शाते हैं। भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की 2013 की प्रतिवेदन सं. 17 में, मंत्रालय ने मामलों के निपटान को तीव्र करने हेतु किये गए अनेक उपाय सूचित किये। तथापि,

वि.व. 13 के अन्त तक लम्बन दर्शाता है कि लम्बित मामलों की संख्या वृद्धि पर है। राष्ट्रीय वाद नीति की कार्यशैली के ध्यानपूर्वक विश्लेषण तथा दीर्घ अवधि से लम्बित मामलों के निपटान हेतु एक समयबद्ध योजना बनाने की आवश्यकता है।

कॉल बुक

1.28 विषय से संबंधित मौजूदा परिपत्र में यह परिकल्पना की गई है कि मामले जिनका कतिपय कारणों जैसे विभागीय अपील, न्यायालय से आदेश, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क राजस्व लेखापरीक्षा आपत्तियों पर वाद-विवाद आदि के कारण अधिनिर्णय नहीं हो सकता, की कॉल बुक में प्रविष्टि की जाए। सदस्य (के.उ.शु.) ने दिनांक 03.10.2005 के अपने डी.ओ. एफ. सं. 101/2/2003-सीएक्स-3 में यह जोर दिया था कि कॉल बुक के मामलों की प्रत्येक माह समीक्षा की जानी चाहिए। महानिदेशक निरीक्षण (सीमा शुल्क एवं केन्द्रीय उत्पाद शुल्क) ने दिनांक 29 दिसम्बर 2005 के अपने पत्र में यह कहते हुए कि माहवार समीक्षा से कॉल बुक में अपुष्ट माँगों की संख्या में महत्वपूर्ण कमी आ सकती है, मासिक समीक्षा की आवश्यकता को दोहराया।

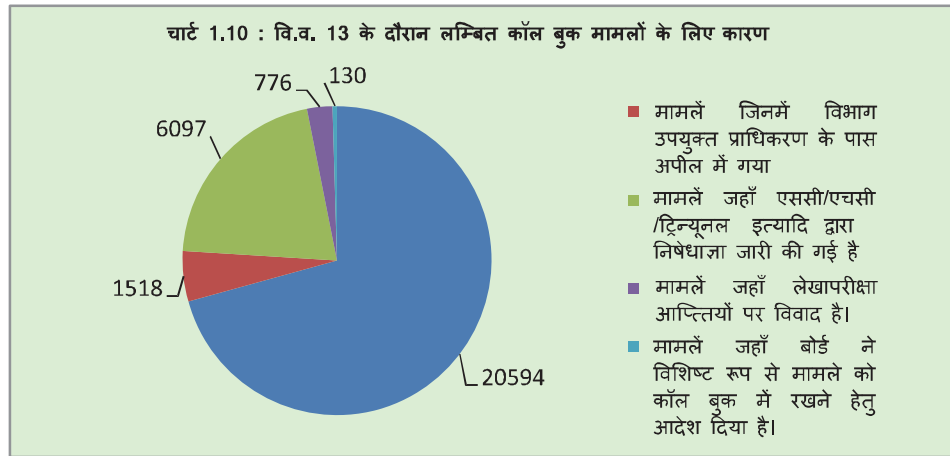
हाल के कुछ वर्षों के दौरान केन्द्रीय उत्पाद शुल्क में कॉल बुक निपटान के संबंध में हमने विभाग के निष्पादन को सारणीबद्ध किया और देखा कि कॉल बुक मामलों का लंबन अभी भी बहुत अधिक है जो कॉल बुक मदों की समीक्षा की प्रक्रिया की गहन निगरानी करने की आवश्यकता को इंगित करता है। वित्त वर्ष 13 के दौरान लंबित कॉल बुक मामलों की संख्या 29000 को पार कर गई।

तालिका 1.18: कॉल बुक लम्बित मामले

वर्ष	वर्ष के दौरान कॉल बुक में हस्तांतरित नये मामले	वर्ष के दौरान निपटान	वर्ष के अन्त में अन्तः शेष	शामिल राजस्व (₹ करोड़ में)	वर्ष के अन्त में लम्बित मामलों का अवधि वार विघटन			
					एक वर्ष से कम	1-2 वर्ष	2-5 वर्ष	5 वर्ष* से अधिक
वि.व. 11	6,746	3,399	24,863	42,207.90	7,133	8,423	6,235	3,069
वि.व. 12	7,168	4,767	24,081	46,727.46	7,112	9,069	6,498	3,775
वि.व. 13	7,002	5,217	29,115	53,521.86	7,434	9,754	7,627	4,409

स्रोत: मंत्रालय द्वारा उपलब्ध कराये गए आँकड़े¹⁶

चार्ट 1.10 वि.व. 13 के दौरान कॉल बुक में लम्बित मामलों के लिए कारण दर्शाता है। दिनांक 14.12.1995 के बोर्ड के परिपत्र के अनुसार, मामलों की केवल चार श्रेणियाँ कॉल बुक में रखी जा सकती हैं। यद्यपि, चार्ट 1.3 दर्शाता है कि 130 मामले अन्य कारणों से लम्बित थे। मंत्रालय को यह पता लगाने के लिए कि इनमें से कितनों को वास्तव में कॉल बुक में रखे जाने की आवश्यकता है, इन मामलों की बारीकी से जाँच करनी चाहिये।



स्रोत: मंत्रालय द्वारा उपलब्ध कराये गए आँकड़े

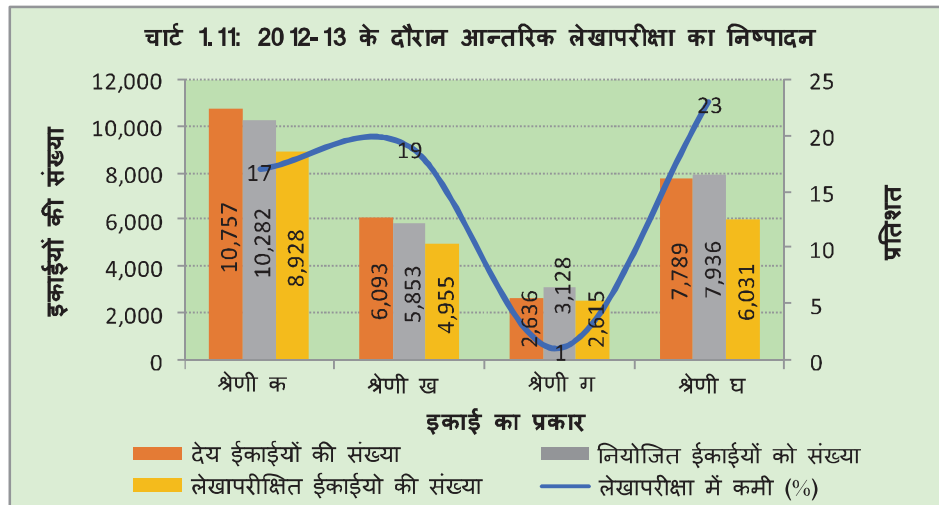
विभाग द्वारा निर्धारितियों की लेखापरीक्षा

1.29 भारत में अप्रत्यक्ष कर प्रशासन का आधुनिकीकरण कनाडा के मॉडल पर आधारित है। नई लेखापरीक्षा प्रणाली ईए 2000 की चार विशिष्ट विशेषताएँ हैं: जोखिम विश्लेषण के पश्चात् वैज्ञानिक चयन, पूर्व-तैयारी पर जोर देना, विधिक अभिलेखों के प्रति वाणिज्य अभिलेखों की जाँच करना तथा लेखापरीक्षा बिन्दुओं की निगरानी करना।

¹⁶ दिनांक 26.11.2013 के मंत्रालय के पत्र एफ सं. 233/17/2013-सीएक्स 7 द्वारा

लेखापरीक्षा प्रक्रिया में प्रारंभिक समीक्षा, प्रणाली की सूचना का एकत्रीकरण और प्रलेखन, संयंत्र का दौरा, आंतरिक नियंत्रणों का मूल्यांकन, राजस्व और प्रवृत्तियों के लिए जोखिम का विश्लेषण, लेखापरीक्षा योजना का विकास, वास्तविक लेखापरीक्षा, लेखापरीक्षा निष्कर्ष तैयार करना, निर्धारिती/रैंज अधिकारी/मंडलीय सहायक आयुक्त के साथ परिणामों की समीक्षा और फिर रिपोर्ट को अंतिम रूप देना शामिल है। कम्प्यूटर सहायता प्राप्त लेखापरीक्षा उपकरणों का रचनात्मक उपयोग, विशेष रूप से बड़ी निर्धारिती इकाइयों की लेखापरीक्षा में, लेखापरीक्षा प्रक्रिया का एक हिस्सा है।

चार्ट 1.11 आयुक्तालयों के लेखापरीक्षा दल द्वारा लेखापरीक्षित इकाइयों की तुलना में लेखापरीक्षा योग्य केन्द्रीय उत्पाद शुल्क इकाइयों की संख्या दर्शाता है।



स्रोत: मंत्रालय द्वारा उपलब्ध कराये गए आँकड़े

उपरोक्त चार्ट दर्शाता है कि श्रेणी 'क' इकाइयों (अनिवार्य) और श्रेणी 'ख' इकाइयों (उच्च राजस्व गैर-अनिवार्य इकाइयों) के कवरेज में कमी आई थी। दूसरी तरफ विभाग ने लेखापरीक्षा हेतु देय इकाइयों की तुलना में अधिक श्रेणी ग एवं घ इकाइयों (कम राजस्व की गैर अनिवार्य इकाइयों) की योजना बनाई थी। नियोजित इकाइयों की तुलना में, वास्तव में लेखा परीक्षित इकाइयों की संख्या में कमी आई है। जबकि उच्च राजस्व देने वाली इकाइयों की उपेक्षा की जा रही थी, कम राजस्व देने वाली इकाइयों की लेखापरीक्षा की गई थी जो दोषपूर्ण नियोजन प्रक्रिया को इंगित करती है।

मंत्रालय ने सूचित किया कि अनिवार्य इकाइयों की लागत पर गैर-अनिवार्य इकाइयों की बड़ी संख्या में लेखापरीक्षा करने की पद्धति में कटौती करने के लिए मुख्य आयुक्तों को दिशा-निर्देश जारी कर दिये गये हैं।

आंतरिक लेखापरीक्षा की गुणवत्ता

1.30 हमने अनिवार्य इकाईयों की डेस्क समीक्षा, सत्यापन और कवरेज से संबंधित निर्धारित नियमों का पालन न करने का पहले भी अवलोकन किया था¹⁷। हमने पाया कि आंतरिक लेखापरीक्षा द्वारा निर्धारिती परिसरों में लेखापरीक्षा किये जाने के बाद भी, ₹ 1.72 करोड़ राशि की चूकें (उत्पाद शुल्क योग्य माल के कम मूल्यांकन को न खोजना और सेनवेट क्रेडिट का अनियमित लाभ लेना) थी, ऐसे दो मामले इस रिपोर्ट के पैराग्राफ 3.4.1 एवं 3.4.2 में दर्शाये गये हैं।

मंत्रालय ने सूचित किया कि विभाग द्वारा सभी आयुक्तालयों के लिए वार्षिक रूप से लेखापरीक्षा निदेशालय द्वारा गुणवत्ता आश्वासन समीक्षा (क्यू ए आर) की जाती है और श्रेणी प्रदान की जाती है, जिसे लेखापरीक्षा निदेशालय की वार्षिक रिपोर्ट में प्रकाशित किया जाता है। मंत्रालय ने यह भी कहा कि इस पक्ष को और अधिक व्यवस्थित और मजबूत बनाने के लिए प्रयास किये जा रहे थे।

अस्थायी निर्धारण

1.31 केन्द्रीय उत्पाद शुल्क नियम, 2002 का नियम 7 दर्शाता है कि जहां निर्धारिती उत्पाद शुल्क योग्य माल के मूल्य या लागू दर के निर्धारण में असमर्थ हैं, वह अस्थायी आधार पर शुल्क भुगतान के लिए केन्द्रीय उत्पाद शुल्क के सहायक/उप आयुक्त को अनुरोध कर सकता है। केन्द्रीय उत्पाद शुल्क सहायक/उप आयुक्त प्रासंगिक सूचना उपलब्ध होने पर निर्धारण को अंतिम रूप प्रदान करते हैं। तालिका 1.19 विगत तीन वर्षों के दौरान अस्थायी निर्धारण की स्थिति को दर्शाती है।

तालिका 1.19: विगत तीन वर्षों के दौरान लंबित अस्थायी निर्धारण मामले

वर्ष	वर्ष के अंत तक लंबित मामले	शामिल राजस्व	विलंबन का अवधि-वार विघटन			
			6 मास से कम	6-12 मास	1 वर्ष - 5 वर्ष	5 वर्षों से अधिक
वि.व. 11	295	469.08	120	63	198	106
वि.व. 12	374	495.61	137	129	217	107
वि.व. 13	432	484.83	143	101	308	107

स्रोत: मंत्रालय द्वारा प्रस्तुत किये गये आँकड़े।

¹⁷ “आयुक्तालयों, प्रभागों और रेंजों की कार्यप्रणाली” पर 2011-12 का सीएजी का लेखापरीक्षा प्रतिवेदन सं. 25

तालिका 1.19 दर्शाती है कि 100 से अधिक मामले पांच वर्षों से अधिक से लंबित थे। मंत्रालय को अधिक समय से लंबित मामलों की जांच कर उनके निपटान हेतु निर्देश जारी करना चाहिए।

प्रति अपवंचन

1.32 केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय और केंद्रीय उत्पाद शुल्क इंटेलीजेंस के महानिदेशक (डीजीसीईआई) केंद्रीय उत्पाद शुल्क और सेवा कर अपवंचन की जांच और रोकने का कार्य करते हैं। जबकि आयुक्तालय, क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत इकाईयों के बारे में उनके व्यापक डाटा बेस तथा क्षेत्र में उपस्थिति के कारण शुल्क अपवंचन को रोकने हेतु प्रथम रक्षा स्तर है, डीजीसीईआई को वास्तविक राजस्व के अपवंचन के बारे में विशिष्ट आसूचना संग्रहण में विशिष्टता प्राप्त है। इस प्रकार से संग्रहीत आसूचना, आयुक्तालयों से साझा की जाती है और अखिल भारतीय के स्तर के मामलों में जांच भी डीजीसीईआई द्वारा की जाती है। तालिका 1.20 विगत तीन वर्षों के दौरान डीजीसीईआई द्वारा पकड़े गये प्रति अपवंचन मामलों को दर्शाती है।

तालिका 1.20: विगत तीन वर्षों के दौरान डीजीसीईआई का प्रति-अपवंचन निष्पादन

वर्ष	पकड़े गए मामलें		जांच के दौरान स्वैच्छिक अदायगी
	मामलों की संख्या	राशि	राशि
वि.व. 11	732	1,355.65	137.19
वि.व. 12	450	1,139.63	255.23
वि.व. 13	458	2,940.22	1,018.96

स्रोत: मंत्रालय द्वारा प्रस्तुत किये गये आँकड़े

यह देखा जा सकता है कि पकड़े गये प्रति अपवंचन मामलों की संख्या विगत दो वर्षों के दौरान से लगभग स्थिर रही किंतु अपवंचित राशि लगभग दोगुनी हो गई। जांच के दौरान स्वैच्छिक अदायगी में भी वृद्धि हुई।

1.33 तालिका 1.21 विगत तीन वर्षों के दौरान आयुक्तालयों द्वारा पकड़े गये प्रति-अपवंचन मामलों को दर्शाती है।

तालिका 1.21: विगत तीन वर्षों के दौरान आयुक्तालय का प्रति-अपवचन निष्पादन

₹ करोड़

वर्ष	पकड़े गये मामले		जांच के दौरान स्वैच्छिक अदायगी	
	मामलों की संख्या	राशि	राशि	राशि
वि.व. 11	2,854	5,564.47		711.31
वि.व. 12	2,877	2,787.98		965.17
वि.व. 13	2,150	3,415.29		482.48

स्रोत: मंत्रालय द्वारा प्रस्तुत किये गये आँकड़े

आयुक्तालय स्तर पर वि.व. 13 में पकड़े गये मामलों की संख्या में विगत वर्ष की तुलना में कमी हुई। वि.व. 13 में जांच के दौरान स्वेच्छा से की गई अदायगी में लगभग 50 प्रतिशत कमी हुई।

विभागीय प्रयासों द्वारा संग्रहण

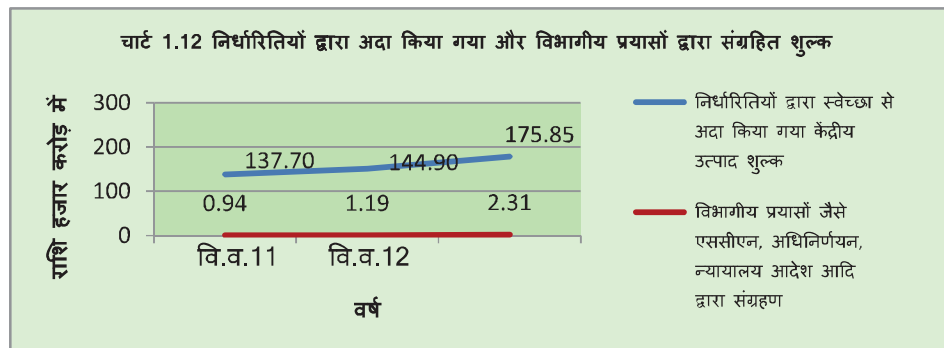
1.34 स्वनिर्धारण दौर में, निर्धारिती स्वयं अपना शुल्क निर्धारित और अदा करता है। कुछ राजस्व वसूली विभागीय प्रयासों से भी होती है। तालिका 1.22 निर्धारितियों द्वारा अदा किया गया शुल्क और विभागीय प्रयासों से अतिरिक्त संग्रहण को दर्शाती है।

तालिका 1.22 विभागीय प्रयासों द्वारा संग्रहण

₹ करोड़

वर्ष	निर्धारितियों द्वारा स्वेच्छा* से अदा किया गया केंद्रीय उत्पाद शुल्क	विभागीय प्रयासों जैसे एससीएन, अधिनिर्णयन, न्यायालय आदेश आदि# द्वारा संग्रहण
वि.व. 11	1,37,701	944.88
वि.व. 12	1,44,901	1,194.93
वि.व. 13	1,75,845	2,310.15

स्रोत: * संबंधित वर्षों के वित्त लेखे #मंत्रालय द्वारा उपलब्ध कराये गये आँकड़े



बकाया कर

1.35 कानून, मांगे गये किन्तु वसूल न हो पाये राजस्व की वसूली के विभिन्न तरीके प्रदान करता है। इसमें उस व्यक्ति, जिससे राजस्व वसूल किया जाना है, को देय राशि, यदि कोई हो, का समायोजन, जब्त किए गए उत्पाद शुल्क योग्य माल की बिक्री द्वारा वसूली और जिला राजस्व प्राधिकरण द्वारा भूमि राजस्व के बकाया के रूप में वसूली किया जाना शामिल है।

तालिका 1.23 बकाया वसूली

वर्ष	वर्ष के आरंभ में बकाया राशि	वर्ष के दौरान संग्रहण	वर्ष के अंत में लंबित बकाया वसूली	₹ करोड़
				संग्रहण, वर्ष के आरंभ में बकाये के % के रूप में
वि.व. 11	25,864.84	1,170.06	30,029.59	4.52
वि.व. 12	30,029.59	1,132.59	34,654.65	3.77
वि.व. 13	34,654.65	1,884.10	47,621.52	5.44

स्रोत: मंत्रालय द्वारा प्रस्तुत किये गये आँकड़े।

तालिका 1.23 दर्शाती है कि वि.व. 13 में वसूली के लिए लंबित बकाया 47,621 करोड़ तक पहुँच गया था जबकि वर्ष के दौरान संग्रहण मात्र 1,884 करोड़ था। मंत्रालय ने सूचित किया कि मामलों की न्यायिक कर वसूली अधिकरणों में देख-रेख, बकाया राजस्व के डाटा बेस के कम्प्यूटरीकरण, बकाया वसूली के लिए समर्पित कर्मचारियों की टीम तैयार करने सहित कई कदम उठाये गये हैं। हालांकि तालिका 1.23 दर्शाती है कि बकाया का विलंबन प्रतिवर्ष बढ़ रहा है और वि.व. 13 के दौरान वसूली मात्र 5 प्रतिशत थी। बोर्ड को अपनी की गई कार्रवाई की प्रभावकारिता का विश्लेषण करना चाहिए।

संग्रहण की लागत

1.36 तालिका 1.24 में कुल संग्रहण के संबंधित आंकड़ों के साथ केंद्रीय उत्पाद शुल्क और सेवाकर संग्रहण में विगत पांच वर्षों के दौरान किये गये खर्च को हमने दर्शाया है। इस तथ्य के बावजूद कि केंद्रीय उत्पाद शुल्क में स्वनिर्धारण है और निर्धारिती को विवरणियों द्वारा अदा किये गये शुल्क घोषित करने पड़ते हैं और आवश्यक रूप से इलैक्ट्रॉनिक विवरणियों की फाइलिंग और भुगतान में इलैक्ट्रॉनिक साधनों के प्रयोग में वृद्धि के बाद भी संग्रहण की लागत में सुनिश्चित रूप में वृद्धि हो रही है।

तालिका 1.24: केंद्रीय उत्पाद शुल्क और सेवा कर प्राप्तियां और संग्रहण की लागत

वर्ष	केंद्रीय उत्पाद से प्राप्तियां*	सेवा कर से प्राप्तियां*	कुल प्राप्तियां	#संग्रहण की लागत	प्राप्तियों के % के रूप में संग्रहण की लागत
वि.व. 09	1,08,613	60,941	1,69,554	1,650	0.97
वि.व. 10	1,02,991	58,422	1,61,413	2,127	1.32
वि.व. 11	1,37,901	71,016	2,08,917	2,072	0.99
वि.व. 12	1,44,540	97,356	2,41,896	2,262	0.94
वि.व. 13	1,75,845	1,32,601	3,08,446	2,446	0.79

स्रोत: * संबंधित वर्षों के संघीय वित्त लेखे, #स्रोत: मंत्रालय द्वारा प्रस्तुत किये गये आँकड़े

आईसीटी के वृहद् उपयोग और स्वचालन के बावजूद, संग्रहण लागत में लगातार वृद्धि नजर आ रही है। प्राप्तियों, की प्रतिशतता के रूप में व्यक्त करने पर संग्रहण की लागत लगभग 1 प्रतिशत (वि.व. 11 और वि.वि.12) थी। हालांकि, वि.व. 13 के दौरान संग्रहण लागत 0.79 प्रतिशत तक नीचे आ गई थी।

लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों का प्रभाव

विगत पांच वर्षों के दौरान अनुपालन लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों में दर्शाई गई प्रमुख अनियमितताएं

1.37 विगत पांच वर्षों के दौरान, हमने विभिन्न लेखापरीक्षा आपत्तियाँ सूचित कि जिन्हें तालिका 1.25 में दर्शाया गया है।

1.25 सीएजी की लेखापरीक्षा में दर्शाई गई प्रमुख अनियमितताएं - केंद्रीय उत्पाद शुल्क

वर्ष	उद्ग्रहित न किया गया उप-कर	मांग नहीं की गई	शुल्क का उद्ग्रहण करना/ उद्ग्रहण	ब्याज और जुर्मानों का उद्ग्रहण करना	छूट योग्य माल का मूल्यांकन	उत्पाद शुल्क	सेनवेट क्रेडिट	उत्पाद शुल्क योग्य माल का वर्गीकरण	विशेष महत्व के विषय	विविध	कुल
वि.व. 08	4.25	49.18	292.32	1.47	135.94	39.28	180.62	-	-	-	703.06
वि.व. 09	1.84	-	12.95	12.64	80.26	12.12	-	-	-	22.58	142.39
वि.व. 10	-	-	13.55	6.74	4.12	114.56	120.75	-	-	50.23	309.95
वि.व. 11	-	-	-	8.48	-	22.06	92.39	-	-	5.26	128.19
वि.व. 12	-	-	21.71	9.32	-	-	32.07	-	-	6.22	69.32

राजस्व प्रभाव - केंद्रीय उत्पाद शुल्क

1.38 विगत पांच वर्षों (मौजूदा वर्ष के प्रतिवेदन सहित) के दौरान, हमने कुल ₹ 894.83 करोड़ केंद्रीय उत्पाद शुल्क वाले 533 लेखापरीक्षा पैराग्राफ की सूचना दी। इनमें से, सरकार ने ₹ 529.35 करोड़ के 443 लेखापरीक्षा पैराग्राफों की लेखापरीक्षा आपत्तियां स्वीकार की और ₹ 159.05 करोड़ की वसूली की। तालिका 1.26 में हमने विवरण दर्शाये हैं।

तालिका 1.26: विगत पांच वर्षों की अनुपालन लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों में दर्शाई गई आपत्तियां - केंद्रीय उत्पाद शुल्क

लेखापरीक्षा प्रतिवेदन का वर्ष	शामिल पैराग्राफ		स्वीकृत पैराग्राफ और/या की गई सुधारात्मक कार्यवाही					प्रभावित वसूलियां						
			प्रकाशन पूर्व		प्रकाशन के उपरान्त		कुल		प्रकाशन पूर्व		प्रकाशन के उपरान्त		कुल	
	सं.	राशि	सं.	राशि	सं.	राशि	सं.	राशि	सं.	राशि	सं.	राशि	सं.	राशि
वि.व. 09	75	156.84	41	48.30	6	2.15	47	50.45	24	27.59	3	2.00	27	29.59
वि.व. 10	150	327.77	91	62.07	7	9.58	98	71.65	55	29.12	6	7.50	61	36.62
वि.व. 11	159	158.00	133	117.64	15	34.76	148	152.4	67	46.60	3	0.19	70	46.79
वि.व. 12	87	69.32	85	67.07	6	8.34	91	75.41	48	24.72	1	0.04	49	24.76
वि.व. 13	62	182.90	58	179.44	-	-	58	179.44	36	21.29	-	-	36	21.29
कुल	533	894.83	408	474.52	34	54.83	442	529.35	230	149.32	13	9.73	243	159.02

लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों पर आगे की कार्यवाही

1.39 लोक लेखा समिति ने अपने नौवें प्रतिवेदन (ग्याहरवीं लोक सभा) में संसद में लेखापरीक्षा प्रतिवेदन के प्रस्तुत करने की तिथि से चार महीनों की अवधि के अंदर भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक के प्रतिवेदन के सभी पैराग्राफ पर हमारे द्वारा पुनरीक्षित उपचारात्मक/सुधारात्मक कार्यवाही नोट (एटीएन) प्रस्तुत करने की इच्छा जताई।

अप्रत्यक्ष कर पर पूर्व के लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों में सम्मिलित केंद्रीय उत्पाद शुल्क से संबंधित पैराग्राफों पर बकाये कार्यवाही नोट की समीक्षा ने दर्शाया कि वित्त मंत्रालय, कपड़ा मंत्रालय और वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के संबंध में उपचारात्मक कार्यवाही नोट (एटीएन) का प्रस्तुतीकरण संतोषजनक था। मंत्रालयों द्वारा पूर्व के अनुपालन लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों में दी गई सभी आपत्तियों के संबंध में एटीएन प्रस्तुत किये जा चुके हैं।